सूरह अनाम – 6

ये सूरत मक्की है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- **इस सूरत का हदफ़ अखीदा व मुआमलात में तौहीद ए खालिस है|** 38

- उम्मत को ज़वाल से निकालकर उरूज पाना हो तो अत तस्फियह वत तरबियह पर अमल ज़रूरी है| 39
- इब्ताल ए बातिल व इहखाख ए हख मज़बूत दलाइल की रौशनी में किये गए है|
- ये सूरत तौहीद, रिसालत और आखिरत पर मुश्तमिल है| 40
- तौहीद व रिसालत पर जो एतेराज़ात किये गए थे उनका इस सूरत में जवाब है| 41
- इस सूरत में उस्लूब ए तखरीर (हुज्जत तमाम करना, एतेराज़ात के जवाबात व शुबहात का इज़ाला) को अपनाया गया है| 42
- उस्लूब ए तल्खीन (तरघीब व तरहीन) को अपनाया जाए|
- अंदाज़ के साथ हिजरत, मुखाबला या नुज़ूल ए अज़ाब के मराहिल|
- बिल खुसूस खुरैश व बिल उमूम आलम के सारे लोगों से खिताब है जो बुत परस्ती, अखल परस्ती, औहाम परस्ती, आबा परस्ती या घफ्लत का शिकार होकर अपने खालिख से दूर हो चुके है|
- अरबों की जाहिलियत व सफाहत, अखाइद, मुआमलात, समाजी बूद व बाश, नज़रियात, माशरती निज़ाम में जानना हो तो सूरह अनाम पढना चाहिए|

38 मज़ीद मालूमात के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें: किताब उत तौहीद अल्लज़ी हुव हख्खुल अल्लाही अलल उबैद-मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब, किताब उत तौहीद – लिस शेख सालेह अल फौज़ान|

39 (इस किताब को ज़रूर पढ़िए: अत तस्फियह वत तर्बियह लिल्बानी, जिसमे कुरआन और सहीह हदीस से दो उसूल बयान किये गए है जो उम्मत को ज़वाल से निकाल कर उरूज की तरफ ले जाने वाले है, बि इज्निल्लाह)

40 मज़ीद मालूमात के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें (सूरह उसूल उल ईमान:मुहम्मद बिन सालेह अल उसैमिन)

41 मज़ीद मालूमात के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें (अल इरशाद इला सहीह अल एतेखाद वर रद अला अह्लिस शिर्क वल इनाद: सल्लेह बिन फौज़ान अल फौज़ान)

42 मज़ीद मालूमात के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें (कशफुस शुबहात फित तौहीद: मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब)

बाज़ मौज़ूआत

1. अल्लाह की खुदरत और उसकी वहदानियत के बाज़ दलाइल| (1-3)
2. मुशरिकीन का बातिल के लिए जिदाल करना और उनके अंजाम का बयान| (4-11)
3. अल्लाह की वहदानियत और बासत बादल मौत के बाज़ दलाइल| (12-18)
4. अल्लाह की गवाही अपनी नबी के रिसालत के हख में और रसूलुल्लाह ﷺ की गवाही अल्लाह की वहदानियत के हख में| (19)
5. अहले किताब का नबी ﷺ को पहचानना और उनका नबी को झुठलाने का तज़किरह| (20-26)

6. खियामत के ताल्लुख से मुशरिकीन का मौखिफ और उनके सवालों का जवाब| (27-32)
7. नबी ﷺ को तसल्ली और मुशरिकीन की होने वाली रूसवायी का बयान| (33-36)
8. अल्लाह की खुदरत ए कामिल का बयान, और उसका इल्म तमाम चीज़ों को घेरे हुए है| (37-39)
9. खुशहाली और तंगी का बयान और मुशरिकीन की इन दोनों हालतों में क्या तब्दीली होती है इसका बयान| (40-54)
10. अल्लाह की खुदरत के बाज़ दलाइल| (41-47)
11. रसूलों की मुहीम का बयान और लोगों की मोमिन और काफिर के हिसाब से तख्सीम| (48-49)
12. रसूलुल्लाह ﷺ की बशरियत और उनकी मुहीम का बयान| (50-58)
13. कुल्लियत और जिज़्यात में कमाल ए इल्म का तज़किरह और बन्दों में कमाल ए खुदरत का तज़किरह| (59-67)
14. नबी ﷺ और कुरआन का मज़ाख उड़ाने वालों की मजालिस में बैठने से मना किया गया| (68-70)
15. मुशरिकीन पर रद्द और उनको खियामत के दिन डराया गया| (71-73)
16. इब्रहीम अलैहिस्सलाम का अपने बाप और अपनी खौम से मुकालिमा और अल्लाह की तौहीद के सिलसिले में उन पर हुज्जत खायम करना| (74-83)
17. अम्बिया के लिए अल्लाह की हिदायत, अल्लाह का उनको चुन लेना और उनकी इख्तेदा का हुकुम| (68-70)
18. इन यहूदियों पर तरदीद जिन्होंने बशर पर आसमान से नाज़िल होने वाली कुरआन का इनकार किया| (91-92)
19. इन लोगों की सज़ा का बयान, जिन्होंने खियामत का दिन झुठलाया| (93-94)
20. बन्दों पर अल्लाह के इनामात और खुदरत ए इलाही के मज़ाहिर| (95-99)
21. उन मुशरिकीन का रद्द जिन्होंने अल्लाह के लिए औलाद और बीवी के होने का इलज़ाम लगाया| (100-103)
22. मुशरिकीन के माबूदों को गालियाँ देने से मना किया गया, ताके वो जिहालत में अल्लाह को गालियाँ न दें| (108)
23. मुआजिज़ात तलब करने पर मुशरिकीन को तम्बीह की गयी और उस पर वईद सुनाई गयी| (109-113)
24. अल्लाह की गवाही रसूल ﷺ के हख में, जो भी रब की तरफ से नाज़िल होता है, वो सच है| (114-115)
25. काफिरों की सिफात का बयान और अल्लाह उनकी दिलों की बात को जानता है| (116-117)
26. ज़बाह में हलाल व हराम का बयान| (108-121)
27. मोमिन और काफिर की मिसाल बयान की गयी| (122)
28. मुजरिमीन के मकर और उनकी सज़ा का बयान| (123-124)
29. हिदायत याफ्ता और गुमराह की मिसाल बयान की गयी| (125)
30. हिदायत याफ्ता लोगों की जज़ा का बयान| (126-127)
31. खियामत के बाज़ मनाज़िर का तज़किरह| (128-132)
32. नाफरमान लोगों को डराया गया| (133-135)
33. मुशरिकीन की इफ्तेरा पर ज़ादियों और उनका जवाब| (136-140)

34. अल्लाह की खुदरत और उसकी नेमतों का बयान| (141-144)
35. मुशरिकीन की कमज़ोर शोबा का बयान| (148-150)
36. मुहर्रिमात का तज़किरह| (151-153)
37. अल्लाह ने किताब में जो भी नाज़िल किया इसमें हिदायत है, इसकी इत्तेबा वाजिब है और जो इसकी मुखालिफत करे उसके लिए वईद (154-157)
38. मौत, खियामत और उसकी अलामात का तज़किरह| (158-160)
39. हिदायत अल्लाह की नेमत है और खालिस इबादत करने की तालीम दी गयी, इसलिए के वही खादर ए मुत्लख है| (161-165)

बाज़ अस्बाख

1. अल्लाह ताला ही की इबादत होनी चाहिए, क्यों के वो कमाल ए सिफात का मालिक है|
2. ये काइनात की तखलीख और उसका निज़ाम ए कमाल खुदरत ए इलाही की दलील है|
3. अल्लाह ताला की वहदानियत के वाज़ेह दलाइल के बावजूद काफिरो की हट धर्मी है के वो इनकार पर तुले है|
4. नफा व नुख नुखसान का मालिक सिर्फ एक अकेला अल्लाह है|
5. अल्लाह ताला की निशानियों में अखलमंदों के लिए दर्स ए इबरत है|
6. ज़मीन की सैर व सियाहत का मख्सद अल्लाह की निशानियों में घौर व फिकर करना है|
7. मुशरिकीन हमेशा रसूलों और अल्लाह की निशानियों का मज़ाख उड़ाते है|
8. मुशरिकीन की एक आदत ये है के वो रसूलों पर तोहमतें बांधते है|
9. आप ﷺ की शदीद हिर्स थी के कोई जहन्नम में न जाएँ|
10. गुज़रे हुए पैघम्बरों की जिंदगियों में आप ﷺ के लिए तसल्ली है|
11. मुआजिज़ात अल्लाह की मर्ज़ी से ज़ाहिर होते है|
12. अहले किताब भी निशानियों को देख लेने के बावजूद नबी ﷺ को झुठलाते थे|
13. काफिर व मुशरिक दुनिया व आखिरत में खसारा उठाने वाले है|
14. मुशरिकीन बुघ्ज़ व हसद की वजह से हख को खबूल नहीं करते है|
15. खैर व शर का मालिक सिर्फ अल्लाह है|
16. दावत ए दीन में सब्र व इस्तेखामत दाई के हथयार है|
17. अम्बिया व रुसुल की ज़िन्दगियां सब्र व तहम्मुल का आला नमूना है|
18. हर दौर में हख के मुखालिफीन पाए जाते है|
19. दावत की राह में मसायिब व मुश्किलात आते है|
20. इस्लाम को वही लोग खबूल करते है जो सलीम उल फितरत और ज़िन्दा दिल है|

21. ईमान से दिल को ज़िन्दगी और आँखों को बसीरत मिलती है|
22. काइनात की बड़ी निशानियों के बावजूद काफिर मज़ीद निशानियाँ मांगते है|
23. जो हख के रास्ते में मेहनत करता है, उसे फल ज़रूर मिलता है|
24. काइनात का हर ज़र्रा इस बात पर गवाह है के अल्लाह ही माबूद ए बरहख है|
25. ईमान लाने के बाद आज़माइश होकर रहेगी, ये खानून ए इलाही है|
26. काफिरों और मूश्रिकों को ढील देना ये उनके लिए आज़माइश है|
27. बन्दों पर हुज्जत खायम करने के लिए अल्लाह ने रसूलों को भेजा|
28. रसूलों का काम लोगों को अज़ाब ए इलाही से डराना और रहमत ए इलाही की बशारत देना है|
29. रसूल अपनी तरफ से कुछ भी नहीं कह सकते, वो तो वही ए इलाही के ताबे रहते है|
30. कमज़ोर मुसलमानों पर ताखतवर मुजरिमीन का घल्बा एक आज़माइश है|
31. दीन ए इस्लाम सब के लिए है: अमीर, ग़रीब, बादशाह, फखीर वघैरह|
32. मुशरिकों के शिर्क से अहले ईमान को बरात का इज़हार करना चाहिए|
33. अल्लाह ही अकेला घैब जानने वाला है|
34. नींद- मौत ए सुघरा है|
35. अल्लाह ताला हर चीज़ पर खादिर है, लिहाज़ा उसी से मदद तलब करना चाहिए|
36. अल्लाह ताला ने हर इन्सान को फितरत पर पैदा किया है|
37. दावत ए दीन की बुन्याद खौमी असीबत पर नहीं, बलके इंसानियत की खैर ख्वाही पर है|
38. मुशरिकीन ए मक्का भी मुसीबत के वख्त खालिस अल्लाह ही को पुकारते थे|
39. नेमतों को देने वाला और उनको छीनने वाला सिर्फ अल्लाह ही है|
40. अल्लाह के अहसानात को हमेशा याद रखना चाहिए|
41. दुनिया और आखिरत में इस्लाम ही नजात का वाहिद रास्ता है|
42. गुनाहगारों के साथ बैठने से भी मना किया गया है, इल्ला ये के तब्लीघ करना मख्सूद हो|
43. काफिरों की मजलिस में तखरीब ए अदयान के लिए जाना मुदाहिनत है| दीन के मुआमले में लकुम दीनुकुम वलियदीन और दुनियावी उमूर में हुस्ने सुलूक करें, इस निय्यत के साथ के उनको इस्लाम और हख पहुंचा सके|
44. फ़रिश्ते अल्लाह की मख्लूख है, न के उसकी बेटियाँ|
45. अल्लाह काफिरों को एक वख्त ए मुखर्रर तक महूलत देता है|
46. हिदायत का रास्ता सिर्फ एक ही है और वो इस्लाम का रास्ता है|
47. अच्छी सोहबत बुराइयों से बचाती है|

48. अल्लाह की मदद के बघैर कोई सीधी राह पर चल नहीं सकता|
49. नमाज़ बन्दे और रब के दरमियान ताल्लुख पैदा करती है|
50. अल्लाह के अहकामात के सामने इन्सान को मुती व फरमा बरदार होना चाहिए|
51. दाई के लिए ज़रूरी है के वो मदू से मिल झुलकर रहे|
52. दाई मदू के लिए खैर ख्वाह होता है|
53. एक मोमिन को मदू के लिए हमेशा तड़प रखनी चाहिए|
54. मदू की समझ को सामने रखते हुए बात करनी चाहिए|
55. मुहम्मद ﷺ कोई नया दीन लेकर नहीं आये बलके तमाम अम्बिया का दीन एक ही था|
56. शिर्क नेकियों को बरबाद कर देने वाला अमल है|
57. दाई को हमेशा अल्लाह की मदद तलब करते रहना चाहिए|
58. मुहम्मद ﷺ तमाम अम्बिया की पैरवी व इख्तेदा करते है|
59. सब से बड़ा ज़ुल्म ये है के कोई अल्लाह पर झूठ बांधे|
60. खातिमुल अम्बिया के बाद कोई वही का दावा नहीं कर सकता|
61. कुफ्फार व मुशरिकीन को मौत के वख्त सख्तियों का अज़ाब दिया जाएगा|
62. बास बादल मौत के अखीदे के इसबात के लिए हिस्सी दलाइल काफी है|
63. जब अल्लाह ने हमारी तखलीख करदी है तो इस पर दोबारा लौटना आसान है|
64. इस काइनात में अल्लाह की खुदरत की बे शुमार निशानियाँ है|
65. अल्लाह ने सितारों को रास्ता तलाश करने के लिए बनाया है|
66. इल्मे फल्कियत लोगों की तख्दीर बताने के लिए नहीं, बलके अल्लाह की खुदरत की निशानी है|
67. काइनात की तखलीख में घौर व फिकर करना मोमिनों का शेवा है|
68. दलाइल तौहीद को पेश करते वख्त मदू का लिहाज़ रखना चाहिए|
69. अल्लाह खालिख है, उसके अलावा सब मख्लूख है|
70. अल्लाह की ज़ात का मुकम्मल इदराक करना ना मुमकिन और महाल है|
71. कुरआन ए मजीद हर दौर के लिए मुनासिन और मौज़ू है|
72. दीन के मुआमले में कोई ज़बरदस्ती नहीं, हर शख्स खुद मुख्तार है|
73. दाई का काम दावत पहुंचाना है, नताइज का मालिक अल्लाह है|
74. मुशरिकीन के माबूदों को गाली न दो, वरना फिर वो जिहालत में अल्लाह को गाली देंगे|
75. दावत ए दीन के लिए वसाइले दावत का भी हलाल होना ज़रूरी है|
76. इस काइनात के तमाम काम अल्लाह की मशीयत से होते है|

77. राह ए हख में आज़माइश का आना सुन्नत ए इलाही है|
78. हख व बातिल में हमेशा कश्मकश रही है|
79. हर नबी के कुछ दुश्मन और दोस्त होते है|
80. फ़ितनों के दौर में ईमान ही राहे नजात है|
81. कुरआन ए मजीद कामिल मन्हज ए ज़िन्दगी है|
82. अहले बातिल की कसरत और अहले हख की खिल्लत लोगों को धोके में ना डाले|
83. अहकाम ए शरियत पर अमल पैरा होना ईमान का तखाज़ा है|
84. किताब व सुन्नत का थामना ही फ़ितनों से नजात का रास्ता है|
85. मुहब्बत ए इलाही की दलील ये है के बंदा दीन ए इस्लाम पर कामिल तौर पर अमल करता है|
86. काफिरों और मुशरिकों की जानिब से शुबहात आते रहेंगे, उनको किताब व सुन्नत की रौशनी में हल करना दाई का फ़रीज़ा है|
87. घुरूर व तकब्बुर हख को खबूल करने में रुकावट बनते है|
88. नुबुवत रहमत ए इलाही है, जिसका देने वाला सिर्फ अल्लाह है|
89. जिसके हख में अल्लाह हिदायत का फैसला कर लेता है तो उसे हख को खबूल करने की हिदायत दे देता है|
90. लोगों की हिदायत और गुमराही अल्लाह की राह में है|
91. खियामत के दिन लोग अपने अपने आमाल का इख्रार करेंगे|
92. हख जानने के बाद उसका इनकार करना संगीन जुर्म है|
93. अल्लाह का वादा सच्चा है और वो एक न एक दिन पूरा होकर रहेगा|
94. अल्लाह की ज़ात बे नियाज़ है और सारी मख्लूख उसकी मुहताज है|
95. ज़ुल्म हराम है और अल्लाह ने उसको अपने ऊपर हराम कर लिया है|
96. हलाल व हराम के फैसले करना सिर्फ अल्लाह के हाथ में है|
97. औरत के हुखूख का सच्चा पासदार सिर्फ इस्लाम है|
98. हलाल को हराम और हराम को हलाल करना मुश्किल का संगीन जुर्म है|
99. अल्लाह अकेला नेमत देने वाला है, लिहाज़ा इसी का शुक्र बजा लाना चाहिए|
100. अनाज और मेवों में ज़कात वाजिब है जब निसाब की शर्तें पूरी हो|
101. अल्लाह की हलाल करदा चीज़ें तय्यिबात है, लिहाज़ा उन्हें खाना चाहिए|
102. अल्लाह की हराम करदा चीज़ें खबीस है, लिहाज़ा उनसे बचना चाहिए|
103. हलाल को हराम और हराम को हलाल करना अल्लाह पर इफ्तेरा करना है|
104. इस्लाम में इल्मी मुनाज़ेरह दलील की बुनियाद पर जाएज़ है|

105. शिर्क करना अल्लाह के हख में हख तलफी करना है|

106. अल्लाह के फरामीन व अहकाम, हिकमत और मखासिद पर मबनी है|

107. इस्लाम का रास्ता सीधा रास्ता है, लोगों को इसी पर चलना चाहिए|

108. वालिदैन की ना फ़रमानी हराम है|

109. औलाद को फख्र व फाखा की वजह से क़त्ल करना हराम है|

110. बदकारी से दूर रखना इस्लाम का ऐन तखाज़ा है|

111. यतीम के माल की हिफाज़त करना और उसे बुलूघत पर लौटाना फ़र्ज़ है|

112. नाप तोल में कमी करना हराम है|

113. अल्लाह किसी भी इंसान पर उसकी ताखत से बढ़कर तकलीफ नहीं डालता|

114. हख बात कहना लाज़िम है, अगरचे अपने रिश्तेदारों के खिलाफ ही क्यों न हो|

115. साबेखा किताबें वख्त ज़रुरत थी और कुरआन खियामत तक के लिए हिदायत का सरचश्मा है|

116. अरबी कुरआन की ज़बान है, इसका सीखना ज़रूरी है|

117. खियामत के दिन अल्लाह हिसाब लेगा, उसकी कैफियत वही बेहतर जानता है|

118. कुरआन इत्तेहाद व इत्तेफाख की दावत देता है और इख्तेलाफ व तफ्रीख से रोकता है|

119. इखलास के ज़रिये इबादत व मुआमलात में खबूलियत पैदा होती है|

120. इन्सान और जिन्नात की ज़िन्दगी का मख्सद खालिस रब्बुल आलमीन की इबादत करना है|

121. लोगों की आपस में मईशत में फर्ख अल्लाह की हिकमत का तखाज़ा है|

122. अल्लाह कमाल ए सिफत का मालिक है, लिहाज़ा उसी की इबादत करनी चाहिए|

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- शुरू की चार सूरतों में अहले किताब को दावत ए इस्लाम दी गयी, सूरह अनाम में कुफ्फार ए खुरैश को इतमामे हुज्जत व इन्ज़ार के तौर पर दावत ए इस्लाम पेश की गयी|
- कुफ्फार ए खुरैश को उनके आबा व अजदा के मिल्लत ए इब्राहीम पर होने पर बड़ा नाज़ था, लिहाज़ा सूरह अनाम में बताया गया के इब्राहीम अलैहिस्सलाम का असल दीन इस्लाम है और ये जो कर रहे है वो उनके बनाये हुए निज़ाम व ज़वाबित है, लिहाज़ा उसको छोड़ कर इस्लाम अपनाले|
- कुफ्फार के एतेराज़ात पर मुख्तलिफ जवाबात के ज़रीये इतमामे हुज्जत खायम की गयी| अब इतमामे हुज्जत के बाद भी ना माने तो सूरह आराफ में वाज़ेह अंदाज़ और तारीखी हवालों और खिस्सों के ज़रिये ना फ़रमानी का अंजाम बताया गया है|

हिफ्ज़ व तदब्बुर ए आयात व हदीस बराए तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

आयत 1: खाल ताला: (----------) (अल अनाम:162)
तरजुमा: आप फरमा दीजिये के बिल यखीन मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादात और मेरा जीना और मेरा मरना ये सब खालिस अल्लाह ही का है, जो सारे जहां का मालिक है|

आयत 2: खाल ताला: (----------) (अल अनाम:65)
तरजुमा: आप कह दीजिये के उस पर भी वही खादिर है के तुम पर कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे या तुम्हारे पाँव तले से या के तुम को गुरोह गुरोह करके सब को भिड़ा दे और तुम्हारे एक दूसरे की लड़ाई चका दे| आप देखिये तो सही हम किस तरह मुख्तलिफ पहलूँ से बयान करते है के वो समझ जाएँ|

हदीस 1: (----------) (सहीह मुस्लिम:2890)
तरजुमा: मैंने अपने रब से तीन चीज़ें मांगी, पस दो चीज़ें मुझ को अता करदी गयी और एक चीज़ से मुझे रोक दिया, मैंने अपने रब से मांगा के मेरी उम्मत को खहत साली के ज़रिये हलाक न करे, पस ये मुझे अता कर दिया गया और मैंने अल्लाह ताला से माँगा के मेरी उम्मत को घर्ख करके हलाक न कर, पस अल्लाह ताला ने ये चीज़ भी मुझे अता कर दी और मैंने अल्लाह ताला से सवाल किया के उनकी आपस में एक दूसरे से लडाये न, तो मुझे इस सवाल से मना कर दिया गया|